

डा. मनोज कुमार  
संयुक्त निदेशक

पत्रांक : 16-1/2020-21/  
दिनांक : 21 दिसम्बर, 2020

सेवा में

निदेशक  
उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण उ०प्र०  
2-सप्रू मार्ग, लखनऊ (उ०प्र०)।

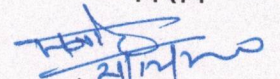
विषय : पूर्वी उत्तर प्रदेश (फैजाबाद के आस पास जनपदों) में आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी के प्रकट होने के पूर्वानुमान के सम्बन्ध में।

महोदय

संस्थान द्वारा विकसित इन्डो-ब्लाइटकास्ट (पैन इंडिया मॉडल) से पिछेता झुलसा बीमारी का पूर्वानुमान लगाया गया है, जिसके अनुसार मौसम की अनुकूलता के आधार पर आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी निकट भविष्य में आने की सम्भावना है। अतः आप से अनुरोध है कि आप अपने स्तर पर उपलब्ध प्रचार-प्रसार के साधनों का प्रयोग करके किसान भाइयों को इसकी सूचना दें।

जिन किसान भाइयों ने आलू की फसल में अभी तक फफूंदनाशक दवा का पर्णीय छिड़काव नहीं किया है या जिनकी आलू की फसल में अभी पिछेता झुलसा बीमारी प्रकट नहीं हुई है, उन सभी किसान भाइयों को यह सलाह दी जाती है कि वे मैन्कोजेब/प्रोपीनेब/क्लोरोथेलॉनील युक्त फफूंदनाशक दवा का रोग सुग्राही किस्मों पर 0.2-0.25 प्रतिशत की दर से अर्थात् 2.0-2.5 किलोग्राम दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर छिड़काव तुरन्त करें। साथ ही साथ यह भी सलाह दी जाती है कि जिन खेतों में बीमारी प्रकट हो चुकी हो उनमें किसी भी फफूंदनाशक - साईमोक्सेनिल + मैन्कोजेब का 3.0 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर (1000 लीटर पानी) की दर से अथवा फेनोमिडोन + मैन्कोजेब का 3.0 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर (1000 लीटर पानी) की दर से अथवा डाईमथोमार्फ 1.0 किग्रा. + मैन्कोजेब 2.0 किग्रा. (कुल मिश्रण 3.0 किग्रा.) प्रति हैक्टेयर (1000 लीटर पानी) की दर से छिड़काव करें। फफूंदनाशक को दस दिन के अन्तराल पर दोहराया जा सकता है। लेकिन बीमारी की तीव्रता के आधार पर इस अन्तराल को घटाया या बढ़ाया जा सकता है। किसान भाइयों को इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि एक ही फफूंदनाशक का बार-बार छिड़काव ना करें।

भवदीय

  
(मनोज कुमार)